9

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
सैकण्डरी स्कूल परीक्षा (कक्षा दसवीं)
परीक्षार्थी प्रवेश–पत्र के अनुसार भरें

विषय **Subject :** SCIENCE

विषय कोड **Subject Code :** 086

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination : 13.03.2019 Wednesday

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper : Hindi

प्रश्न पत्र के ऊपर लिखे कोड को दर्शाऐं :
Write code No. as written on the top of the question paper :

Code Number	Set Number
31 1 1	● ② ③ ④

अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका (ओं) की संख्या
No . of supplementary answer -book(s) used NO

बेंचमार्क विकलांग व्यक्ति हाँ / नहीं
Person with Benchmark Disabilities **Yes / No** NO

विकलांगता का कोड
(प्रवेश पत्र के अनुसार)
Code of Disabilities
(as given on Admit Card) NO

क्या लेखन – लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हाँ / नहीं
Whether writer provided : Yes / No NO

यदि दृष्टिहीन हैं तो उपयोग में लाए गये सोफ्टवेयर का नाम :
If Visually challenged, name of software used : N/A

*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।

Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

कार्यालय उपयोग के लिए
Space for office use

1611039
086 / 14727

Instructions to Candidates

1. Make sure that the answer-book contains 32 pages and are properly serialed in number (including title pages) as soon as you receive it.
2. DO NOT make any special sign or mark in or outside the answer-book, supplementary answer-book, graph-paper, map etc.
3. DO NOT write your roll no., name of your school or place of examination in any of your answers.
4. You must write the supplementary answer-book serial no. in the attendance sheet.
5. Write on each ruled line on both sides and do not waste pages by leaving a wider margin.
6. DO NOT tear out or fold the pages of the answer-book and do not leave any page blank unnecessarily. No supplementary anwer-book(s) should be asked for unless this answer - book / the previous supplementary answer-book is finished.
7. Number your answers according to their numbers in the question paper.
8. Draw a line when a question (or a part thereof) is finished.
9. Securely tag your answer-book with supplementary answer-book(s), graph-paper, map etc. if used by you, but DO NOT write your Roll No. on the supplementary answer-book, graph-paper, map etc.
10. Use only blue-black or royal-blue ink/gel/ball point pen. Using of any other writing instrument/ink/pencil etc will be on your own risk and responsibility.
11. For rough calculation etc., appropriate margin on the right-hand side of the page may be drawn. The rough calculations etc. should be crossed out afterwards.
12. DO NOT leave the examination hall without handing over the answer-book to the Asstt. Supdt.
13. If during the course of examination, a candidate is found indulging in any of the following, he/she shall be deemed to have used unfair means at the examinations, and as such his/her result shall not be declared but shall be marked as UNFAIR MEANS (U.F.M.) :-
    (a) having in possession papers, books, notes or any other material or information relevant to the examination in the paper concerned;
    (b) giving or receiving assistance directly or indirectly of any kind or attempting to do so;
    (c) writing questions or answers on any material other than the answer book given by the Centre Superintendent for writing answers;
    (d) tearing of any page of the answer-book or supplementary answer-book etc.
    (e) contacting or communicating or trying to do so with any person, other than the Examination Staff, during the examination time in the examination centre;
    (f) taking away the answer-book out of the examination hall/room;
    (g) using or attempting to use any other undesirable method or means in connection with the examination;
    (h) smuggling out Question Paper or its part or smuggling out answer-book/ supplementary answer-sheet or part thereof; and
    (i) threatening any of the officials connected with the conduct of the examinations or threatening of any of the candidates.

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली

Central Board of Secondary Education, Delhi

SECONDARY SCHOOL EXAMINATION (CLASS X)

सैकण्डरी स्कूल परीक्षा (कक्षा दसवीं)

Q. No.	01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	TOTAL
MARKS	01	01	02	02	02	03	03	03	03	03	23

Q. No.	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	TOTAL
MARKS	03	03	03	03	03	05	05	05	05	05	38+2 ⇒ 40

Q. No.	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	TOTAL
MARKS	05	1½	02	02	02	02	02				16½

Q. No.	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	TOTAL
MARKS											

GRAND TOTAL	79½ ⇒ 80
MARKS IN WORDS	Eighty

CBSE

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन उचित प्रश्नपत्र के सैट और अंकन योजना के अनुसार किया है। यह भी प्रमाणित किया जाता है कि उत्तर पुस्तिका के अन्दर कोई भी प्रश्न बिना मूल्यांकन के नहीं छूटा है।

Certified that I have evaluated this answer book according to the correct set of question paper and

019

section - A

(1) 01 वोल्वनोमीटर एक ऐसा यंत्र है जो विद्युत परिपथ में विद्युत धारा का संसूचित करता है। 1

(2) 01 निम्नलिखित कारणों से मानते हैं -
(i) यह जलने पर पर्यावरण को प्रदूषित नहीं करता है
(ii) यह ऊर्जा का नवीकरणीय स्रोत है। 1
(iii) यह अधिक तापमान पर उत्पन्न करता है।

(3) (a) आवर्त संख्या = 3 ½
02 समूह संख्या = 14 ½

(b) तत्व का नाम = सिलिकॉन ½
भौतिक गुणधर्म - इस तत्व के बाहरी कोश में 4 इलेक्ट्रॉन होते हैं। यह उपधातु है। ½

(4) 02 ग्लूकोज का उपचयन दो विभिन्न ढंग ऑक्सीजन की

उपस्थिति मे तथा ऑक्सीजन के अभाव मे।

(a) ऑक्सीजन की उपस्थिति मे — ग्लूकोस के 6 कार्बन वाले अणु को पहले पायरूवेट मे विखंडन होता है तथा पायरूवेट का विखण्डन माइटोकांड्रियाँ मे होता है। ग्लूकोस के विखण्डन के पश्चात जल कार्बन डाइऑक्साइड तथा ऊर्जा का निर्माण होता है।

पायरूवेट $\xrightarrow[\text{माइटोकांड्रिया}]{\text{ऑक्सीजन की उपस्थिति}}$ $H_2O + CO_2 +$ ऊर्जा

(b) ऑक्सीजन के अभाव मे — ग्लूकोस का विखण्डन ऑक्सीजन के अभाव मे मानव के पेशी कोशिका मे होता है फलस्वरूप लैक्टिक अम्ल तथा ऊर्जा जैसे उत्पाद का निर्माण होता है।

पायरूवेट $\xrightarrow[\text{पेशी कोशिका}]{\text{ऑक्सीजन के अभाव}}$ लैक्टिक अम्ल + ऊर्जा

(6) हम प्रेक्षण करते हैं कि श्वेत रंग का सिल्वर क्लोराइड का रंग धूसर रंग में परिवर्तित हो जाता है ऐसा सिल्वर और क्लोरीन के वियोजन के कारण होता है।

यह वियोजन अभिक्रिया है।

रासायनिक अभिक्रिया

$$2AgCl \xrightarrow{\text{सूर्य का प्रकाश}} 2Ag + Cl_2$$

(7) अम्ल हाइड्रोक्लोरिक अम्ल (HCl) है तथा क्षार सोडियम हाइड्रॉक्साइड (NaOH) है।

क्योंकि अम्ल (प्रबल) तथा प्रबल क्षारक मिलकर सोडियम क्लोराइड का निर्माण करते हैं अतः यह उदासीन लवण है।

इसे खनिज नमक तब कहा जाएगा जब इसमें बहुत सारे अशुद्धियाँ पायी जाएगी।

खनिज नमक जिनमे बहुत सारी अशुद्धियाँ होती है। जैसे गैंग हो सकते है जब खनन किया जाता है तब नमक खनिज नमक के रूप मे उपलब्ध होता है।

(9) तीन प्रकार के रुधिर वाहिकाएँ
(a) धमनी
(b) शिरा
(c) फुफ्फुस शिरा
(d) फुफ्फुस धमनी

(a) धमनी — ऑक्सीजनित रक्त को शरीर के विभिन्न अंगो तक स्थानांतरित करती है।

(b) शिरा — विऑक्सीजनित रक्त को शरीर के शरीर के अंगो से हृदय तक ले जाती है। यह कम मोटी तथा कम लचीली होती है।

(c) फुफ्फुस शिरा — यह ऑक्सीजनित रक्त को फेफड़े से हृदय में ले जाती है।

(d) केशिकाएँ — केशिकाएँ मिलकर शिरा बनाती है।

(10) आँखो में तीव्र प्रकाश को फोकसित करने पर प्रतिवर्ति क्रिया होती है।

(02) हमारे पर्यावरण के अनुक्रिया के फलस्वरूप अचाक हुई क्रिया को प्रतिवर्ति क्रिया कहते है।
सूचनाओं के स्थानांतरण के लिए जिस पथ का इस्तेमाल किया जाता है उसे प्रतिवर्ति चाप कहते है।
चरण निम्नलिखित है
(i) जब प्रकाश को आँखो में फोकसित किया जाता है तो आँख में उपस्थित ग्राही सूचनाओं को प्राप्त करती है।
(ii) ग्राहि से सूचना संवेदी तंत्रिका कोशिका द्वारा मेरुरज्जू तक ले जाया जाता है।
(iii) मेरुरज्जू में सूचना के समाकलन के बाद प्रेरक तंत्रिका कोशिका द्वारा शरीर के पेशियों में स्थानांतरित कर दिया जाता है।
इस प्रकार पेशियों के फैलाव से प्रकाश आँखो पर

फोकसित करने पर हमारी आँखे बंद हो जाती है।
(d) तीव्र प्रकाश से आँखो की पलके आँखो को बंद करके सुरक्षा प्रदान करती है।

(11) पादप हार्मोन – वे सासायनिक पदार्थ जो पौधो मे वृद्धि तथा विकास का कार्य करते है उन्हे पादप
02 हार्मोन कहते है।

(i) जिब्रेलिन
(ii) साइटोकाइनिन
(iii) एब्सिसिक अम्ल
(iii) ऑक्सीन

12 (a) 03 उपार्जित लक्षण
उपार्जित लक्षण जीवो मे जीवनकाल मे प्राप्त किए जाते है।

अनुवंशिक लक्षण
(ii) अनुवंशिक लक्षण जीवो मे उनके पूर्व पीढ़ीयो से वंशानुगत होते है।

(b) यह जनन कोशिका तथा DNA

को प्रभावित नहीं करते हैं।

(c) यह जैव विकास में सहायक नहीं है।

(d) उदाहरण - शरीर का भार, ज्ञान कौशल इत्यादि

(II) यह DNA अनुक्रम को प्रभावित करते हैं।

(III) यह जैव विकास में सहायक है।

(IV) उदाहरण - आँख का रंग, त्वचा का रंग, लंबाई इत्यादि

उ. वर्षा के दिनों में जल की बूंदों के कारण प्राप्त प्रकाश के विभिन्न अवयवों के रंगों को इन्द्रधनुष कहते हैं। इन्द्रधनुष एक प्राकृतिक स्पेक्ट्रम है।

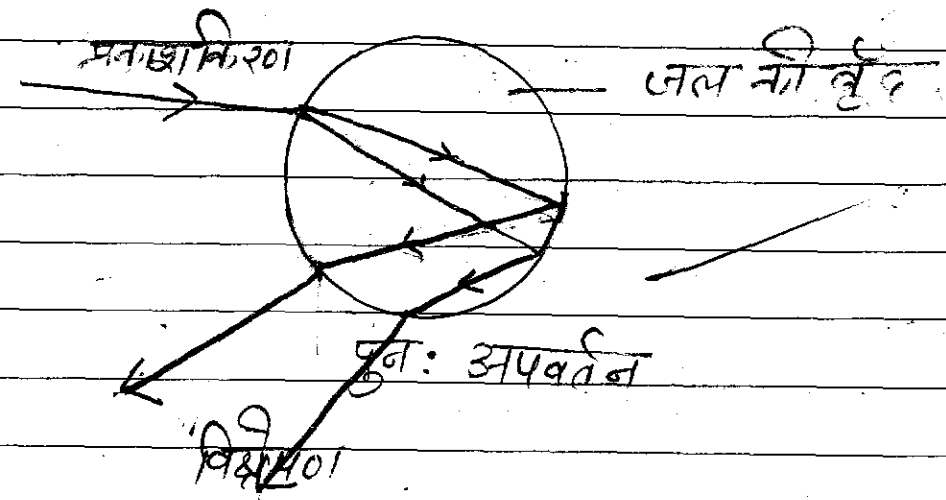

(i) वर्षा के दिनो मे वायुमण्डल मे उपस्थित जल एक प्रिज्म की भाँति कार्य करती है।

(ii) इन्द्रधनुष सूर्य के प्रकाश के विपरीत दिशा मे बनता है।

(iii) जब प्रकाश किरण जल की बूँद से गुजरती है तो अपवर्तित होती है फिर आंतरिक परावर्तन होता है तत्पश्चात् पुन: अपवर्तित होती है और विक्षेपण होता है इस प्रकार इन्द्रधनुष का निर्माण होता है।

(14) (i) निम्नलिखित प्रकार से सहायता कर सकते है
सबसे पहले जैव निम्नकरणीय तथा अजैव निम्नकरणीय पदार्थो को अलग करना चाहिए

(ii) जैव निम्नकरणीय पदार्थो जैसे खेत को उपयोग करे।

(iii) पुन: उपयोग — प्लास्टिक जैसे पदार्थो का पुन: उपयोग करना चाहिए जैसे प्लास्टिक के डिब्बो को रसोई मे पुन: उपयोग करना चाहिए।

(iv) कम उपयोग — अजैव निम्नकरणीय पदार्थो का कम

उपयोग करे।

(iii) पुनः चक्रण — प्लास्टिक जैसे पदार्थों का पुनः चक्रण करें।

(iv) जैव निम्नकरणीय पदार्थों का खाद बनाना चाहिए।

(15) (02) जल का संग्रहण जल संग्रहण कहलाता है जिसमें वर्षा के जल का संरक्षण किया जाता है।

जल संग्रहण के लाभ

(i) यह ग्रीष्म ऋतु में जब जल की कमी होती है तब उपयुक्त होता है।

(ii) जल संग्रहण करने वाले परिवार की आय को बढ़ाता है।

(iii) जल की कमी को पूरा करता है।

भूजल की संपोषित उपलब्धता में असफलता के दो कारण

(i) उचित प्रकार से जल का संरक्षण न कर पाना।

(ii) नदियों के जल वर्षा के बाद बहकर समुद्र में जाना।

(iii) वर्षा जल संग्रहण का उपयुक्त स्थान न होना।

(iv) भौम जल का स्तर नीचे गिरना।

16 (a) (05)

	धातुएँ	अधातुएँ
ऑक्साइड की प्रकृति	धातुएँ ऑक्सीजन से अभिक्रिया करके धातु ऑक्साइड बनाती है जो क्षारीय प्रकृति का होता है।	अधातुक ऑक्साइड अम्लीय प्रकृति के होते है।
(ii) जल के साथ अभिक्रिया	धातुएँ जल से हाइड्रोजन को प्रतिस्थापित कर देती है।	(H_2 के ऊपर के धातुएँ) (ii) अधातुएँ जल से हाइड्रोजन को प्रतिस्थापित नही करती है।
(iii) Cl_2 के साथ अभिक्रिया	धातुएँ क्लोरीन से अभिक्रिया कर आयनिक यौगिक का निर्माण करती है।	(iii) अधातुएँ Cl_2 से अभिक्रिया करके सह संयोजक यौगिक का निर्माण करते है।

16 (i) अधिकांश धातुएँ विद्युत के सुचालक होती है क्योंकि धातुओं में मुक्त इलेक्ट्रॉन होते है जो विद्युत स्थानांतरण के लिए पथ प्रदान करते है।

(ii) आयरन III ऑक्साइड की तप्त एलुमिनियम के साथ अभिक्रिया का उपयोग मशीनी पुर्जो की दरारो को जोड़ने के लिए किया जाता है क्योंकि यह एक थर्माइड अभिक्रिया है अभिक्रिया के के बाद प्राप्त उत्पाद आयरन जो द्रवीय अवस्था मे पाया जाता है जो पुर्जो को जोड़ता है।

17 एल्कोहॉल जो एल्कोहॉली पदार्थों का महत्वपूर्ण अवयव है।

05 रासायनिक सूत्र — CH_3CH_2OH है।

उपयोग

(a) यह एक अच्छा विलायक है जिसका उपयोग टिंचर आयोडिन, कफ, शीरफ, टॉनिक के निर्माण मे किया जाता है।

(ii) एल्कोहॉल (शराब) बनाने मे।

(I) $2CH_3CH_2OH + 2Na \longrightarrow 2CH_3CH_2\bar{O}Na^+ + H_2$

उत्पाद — सोडियम एथाक्साइड तथा हाइड्रोजन गैस का निर्माण होता है।

(II) रासायनिक समीकरण

$$CH_3CH_2OH \xrightarrow[H_2SO_4]{443K\ Heat} CH_2=CH_2 + H_2O$$

उत्पाद — इथीन / एथीन तथा जल का निर्माण होता है।

परागण — परागकणों का वर्तिकाग्र पर स्थानांतरण परागण कहलाता है।

18

परागण दो प्रकार के होते है (I) स्वपरागण — (II) परपरागण

(I) स्वपरागण — जब परागकणों का उसी पुष्प के वर्तिकाग्र पर स्थानांतरण होता है तो उसे स्वपरागण कहते है।

(ii) परपरागण — जब परागकणों को दूसरे पुष्प के वर्तिकाग्र पर स्थानांतरण होता है तो उसे परपरागण कहते हैं।

परागण के दो वाहकों वायु, जल तथा कीट हैं। रसायनानुवर्तन के कारण परागकण बीजांड की ओर परागनलिका से होकर जाता है।

वर्तिकाग्र पर परागकण के स्थानांतरण के बाद एक परागनलिका विकसित होती है जो बीजांड तक जाती है। परागकण नर युग्मक परागनली में स्थानांतरित कर देते हैं जो भ्रूणकोष तक जाती है। भ्रूणकोष में उपस्थित अंड कोशिका से संलयन होता है जिसे निषेचन कहते हैं।

19 बिम्ब की दूरी (u) = −60cm
फोकस दूरी f = −30cm

(i) प्रतिबिम्ब की दूरी v = ?

Em-

$$\frac{1}{v} - \frac{1}{u} = \frac{1}{f}$$

$$\frac{1}{v} = \frac{1}{f} + \frac{1}{u}$$

$$\frac{1}{v} = \frac{1}{-30} + \frac{1}{-60}$$

$$\frac{1}{v} = \frac{-1}{30} - \frac{1}{60}$$

$$\frac{1}{v} = \frac{-2-1}{60}$$

$$\frac{1}{v} = \frac{-\cancel{3}}{\cancel{60}\ 20}$$

$$\frac{1}{v} = \frac{-1}{20}$$

$$v = -20$$

(ii) प्रतिबिम्ब की प्रकृति — आभासी 1½

स्थिति — प्रकाशिक केन्द्र तथा F_1 के बीच 1½

साइज — छोटा होगा 1½

सीधा होगा 1½

(iii)

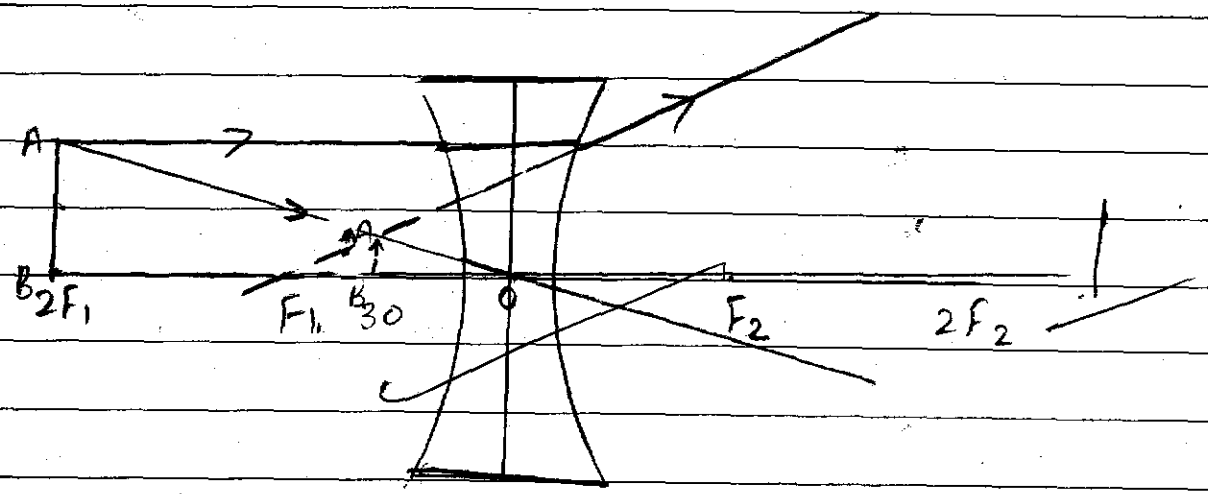

(20) चूँकि पार्श्वक्रम में विभवांतर समान होता है।
पार्श्वक्रम में कुल विद्युत धारा उसमें विभाजित सभी पार्श्वक्रम के योग के बराबर होता है।

$I = I_1 + I_2 + I_3$

$V = IR$

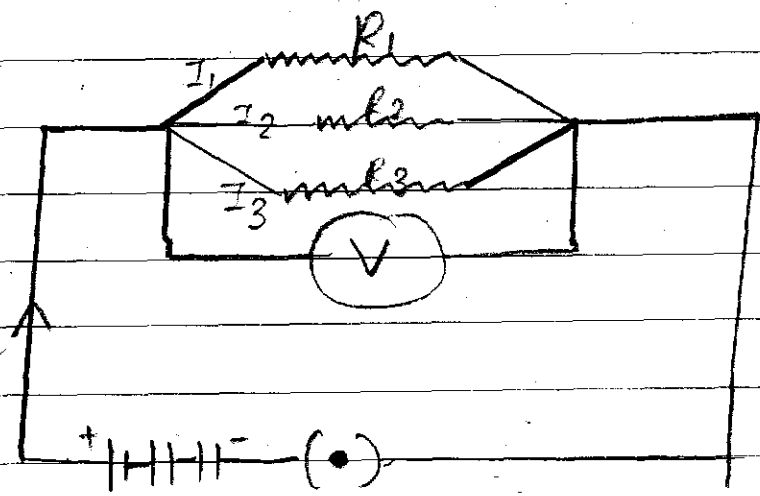

$I_1 = \frac{V}{R_1}$

$I_2 = \frac{V}{R_2}$

$I_3 = \frac{V}{R_3}$

यदि तुल्य प्रतिरोध को $\frac{1}{R_p}$ मानते है तो

$$I = I_1 + I_2 + I_3$$

$$\frac{V}{R_p} = \frac{V}{R_1} + \frac{V}{R_2} + \frac{V}{R_3}$$

$$\frac{\cancel{V}}{R_p} = \cancel{V}\left(\frac{1}{R_1} + \frac{1}{R_2} + \frac{1}{R_3}\right)$$

$$\frac{1}{R_p} = \frac{1}{R_1} + \frac{1}{R_3} + \frac{1}{R_3}$$

20 (b) ~~कुल विभवांतर (V) = 12~~

कुल विभवांतर (V) = 6V

ज्ञात करना I = ?

$R_1 = 12\Omega$

$R_2 = 12\Omega$

$\frac{1}{R_p} = \frac{1}{R_1} + \frac{1}{R_2}$

$\frac{1}{R_p} = \frac{1}{12} + \frac{1}{12}$

$\frac{1}{R_p} = \frac{1+1}{12}$

$\frac{1}{R_p} = \frac{2}{12}$ 6 ½

$R_p = 6\Omega$ कुल प्रतिरोध

$I = \frac{V}{R}$

$I = \frac{6}{6} = 1$

विद्युत धारा = 1 A ½

अत: बैटरी से 1A विद्युत धारा प्रवाहित होगी।

(2) परिनालिका — विद्युत रोधी ताँबे की तार की बेलन की आकृति वाली अनेक फेरो वाली कुंडली को परिनालिका कहते है।

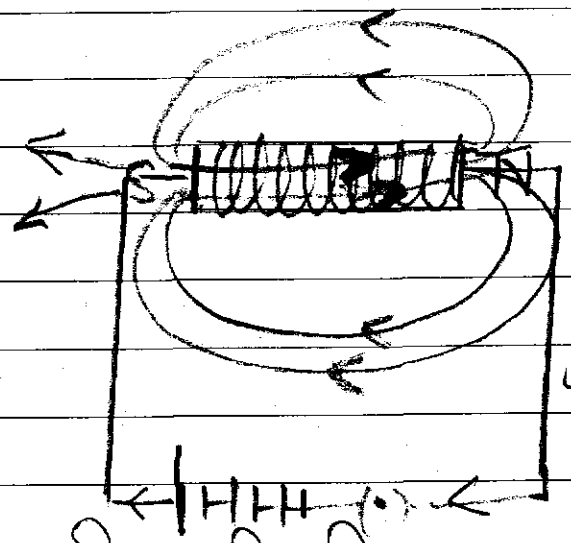

धारावाही परिनालिका

छड़ चुम्बक का चुम्बकीय क्षेत्र

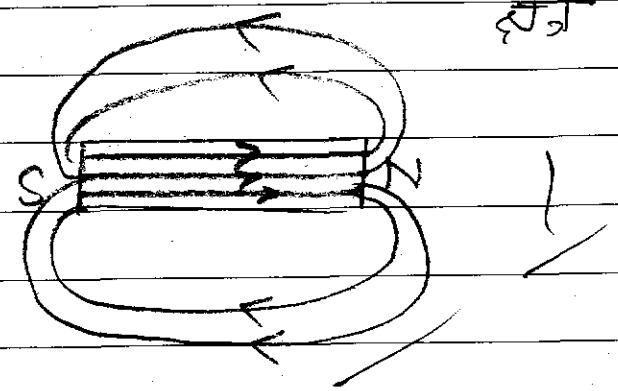

धारावाही परिनालिका	छड़ चुम्बक के चुम्बकीय क्षेत्र
(1) परिनालिका में चुंबकीय क्षेत्र फेरों की संख्या पर निर्भर होता है।	(ii) कुंडलित फेरों का उपयोग नहीं होता है।
(ii) चुंबकीय क्षेत्र रेखाएँ प्रबल होती है।	(ii) चुंबकीय क्षेत्र रेखाएँ कम प्रबल होती है।

22 1½

~~A = HCl~~

~~B = NaOH~~

रासायनिक समीकरण

$$Na_2CO_3 + HCl \longrightarrow NaCl + H_2O + CO_2$$ ½

सोडियम कार्बोनेट अम्ल से अभिक्रिया करके सोडियम क्लोराइड, जल तथा कार्बनडाइ ऑक्साइ का निर्माण करता है। बुदबुदाहट के साथ CO_2 गैस निकलती है।

23 02

A – आसुत जल

B – भूजल

C – आसुत जल + $CaSO_4$

परखनली A मे झाग अधिक उत्पन्न होगा क्योंकि यह शुद्ध जल है। इसमें Ca तथा Mg आयन उपस्थित नही है।

परखनली B मे भूजल जिसमे कैल्सियम तथा मैग्नीशियम आयन हो सकते है इसलिए झाग कम बनेगा।

परखनली C मे $CaSO_4$ आयन है इसलिए साबुन व कैल्सियम से अभिक्रिया करके अघुलनशील पदार्थ स्कम का निर्माण करेगा।

29

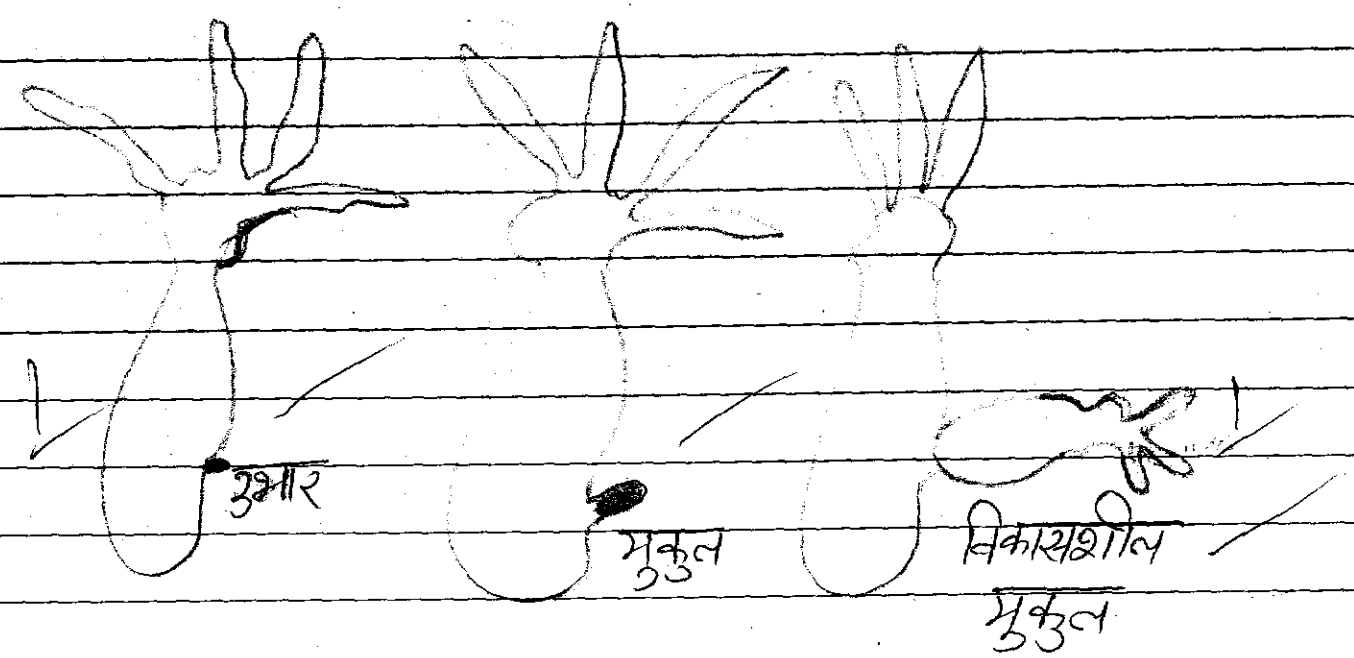

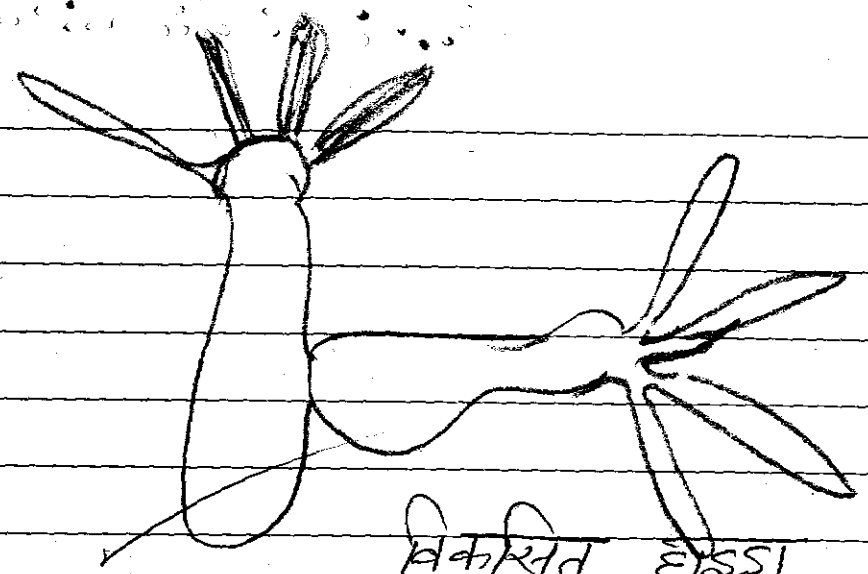

विकसित हाइड्रा

(25) पदार्थ KOH पोटैशियम हाइड्रॉक्साइड है।

(02) KOH का कार्य – जब पौधे CO_2 निस्कासित करते है तो KOH उसे अवशोषित कर लेता है।

परिणाम – परिणाम मे यह देखा जाता है कि जब मे KOH CO_2 का अवशोषण करता है तो परखनली मे जल का स्तर ऊपर उठने लगता है इससे यह सुनिश्चित हो जाता है कि पौधे CO_2 निष्कासित करते है।

26

02

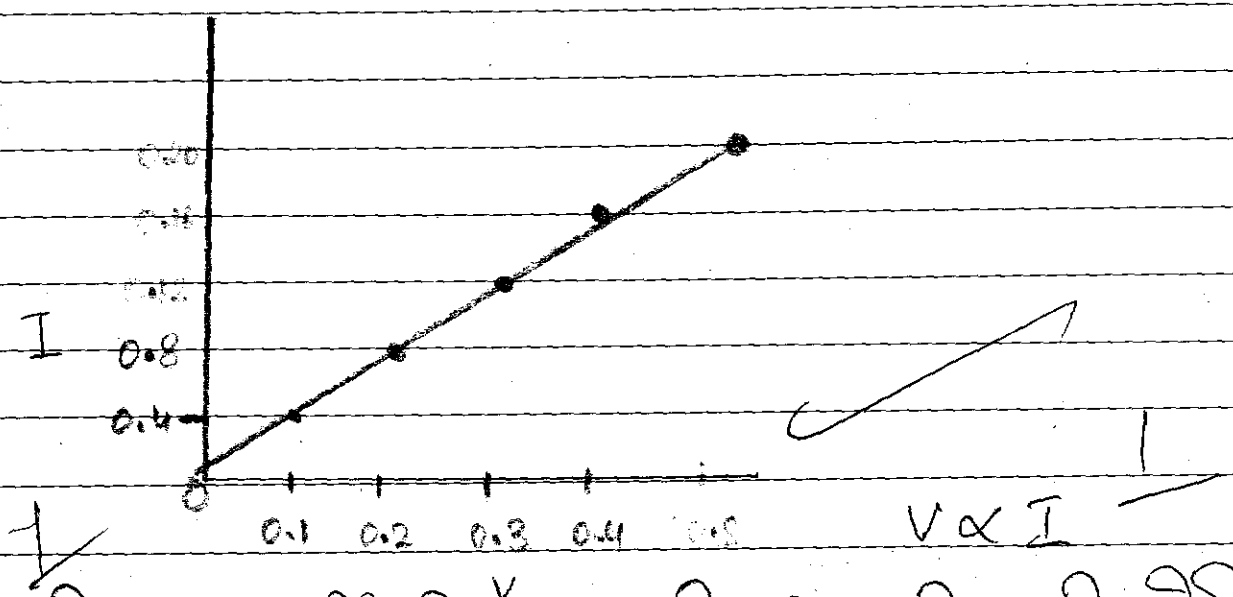

$V \propto I$

ग्राफ सूचित करता है कि अगर विभवांतर मे वृद्धि होती है तो विद्युत धारा मे भी वृद्धि होती है।

$V = V_2 - V_1$
$= 0.2 - 0.1$
$= 0.1$

$I = I_2 - I_1$
$= 0.8 - 0.4$
$= 0.4$

$R = \frac{V}{I}$
$= \frac{0.1}{0.4}$
$= \frac{1}{4}\ \Omega$

27 (i) छात्र को बिंब को स्थिर रखना चाहिए
02 (ii) बिंब को सीधा रखना चाहिए
(iii) स्थिति को दर्शाने के लिए नुकीली पेंसिल का उपयोग करना चाहिए।
(iv) उत्तल लेंस पर कुछ नहीं लगा होना चाहिए।

5 समंजन क्षमता — अभिनेत्र लेंस की वह क्षमता जिसके कारण वह अपनी फोकस दूरियों को समायोजित कर लेती है समंजन क्षमता कहलाती है।
02
उत्तल लेंस का प्रयोग करके अभिनेत्र लेंस द्वारा पास रखी वस्तुओं को देखते है।

जब पक्ष्माभी पेशियाँ सिकुड़ती है तो अभिनेत्र लेंस छोटा होता है तथा बिंब की फोकस दूरी कम हो जाती है इस प्रकार पास के बिंबो को स्पष्ट देख पाते है।

8 (i) तत्व Na

02 सोडियम का ऑक्साइड = Na_2O

$Na + O_2 \rightarrow Na_2O$

~~धातु ऑक्साइड~~ Na यह एक अधिक अभिक्रियाशील धातु है यह ऑक्सीजन से तेजी से अभिक्रिया करता है। यह क्षारीय प्रकृति का होता है। यह ऑक्सीजन को दो इलेक्ट्रॉन आसानी से दे सकता है।

(ii) समूह 13 के तत्व = Al

सूत्र (क्लोराइड) = $Al + Cl_2 \rightarrow AlCl_3$

यह क्लोरीन को 3 इलेक्ट्रॉन देता है। उत्कृष्ट गैस विन्यास प्राप्त करने के लिए एलुमिनियम 3 इलेक्ट्रॉन खो देता है। आयनिक यौगिक का निर्माण करता है।

(iii) समूह 2 के एक तत्व (A) — Mg मैग्नीशियम

समूह 17 के तत्व (B) = Cl_2 क्लोरीन

यौगिक

$$Mg + Cl_2 \longrightarrow MgCl_2$$

बने यौगिक मैग्नीशियम क्लोराइड है

Mg उत्कृष्ट गैस विन्यास प्राप्त करने के लिए 2 इलेक्ट्रॉन को खो देता है। यह आयनिक यौगिक का निर्माण करते है।

(14) पारितंत्र — विभिन्न जैव तथा अजैव घटक मिलकर पारितंत्र का निर्माण करते है।

जैसे घटक जैसे सूक्ष्मजीव, पेड़-पौधे, जंतु

अजैव घटक जैसे - जल, मृदा इत्यादि

तृतीयक उपभोक्ता

द्वितीयक उपभोक्ता

प्राथमिक उपभोक्ता

उत्पादक

ऊर्जा प्रवाह

V. Good

Eighty only

$79\frac{1}{2} = 80$

80

14657

$79\frac{1}{2} \Rightarrow 80$

80

Eighty

Qanleep

14559

APar
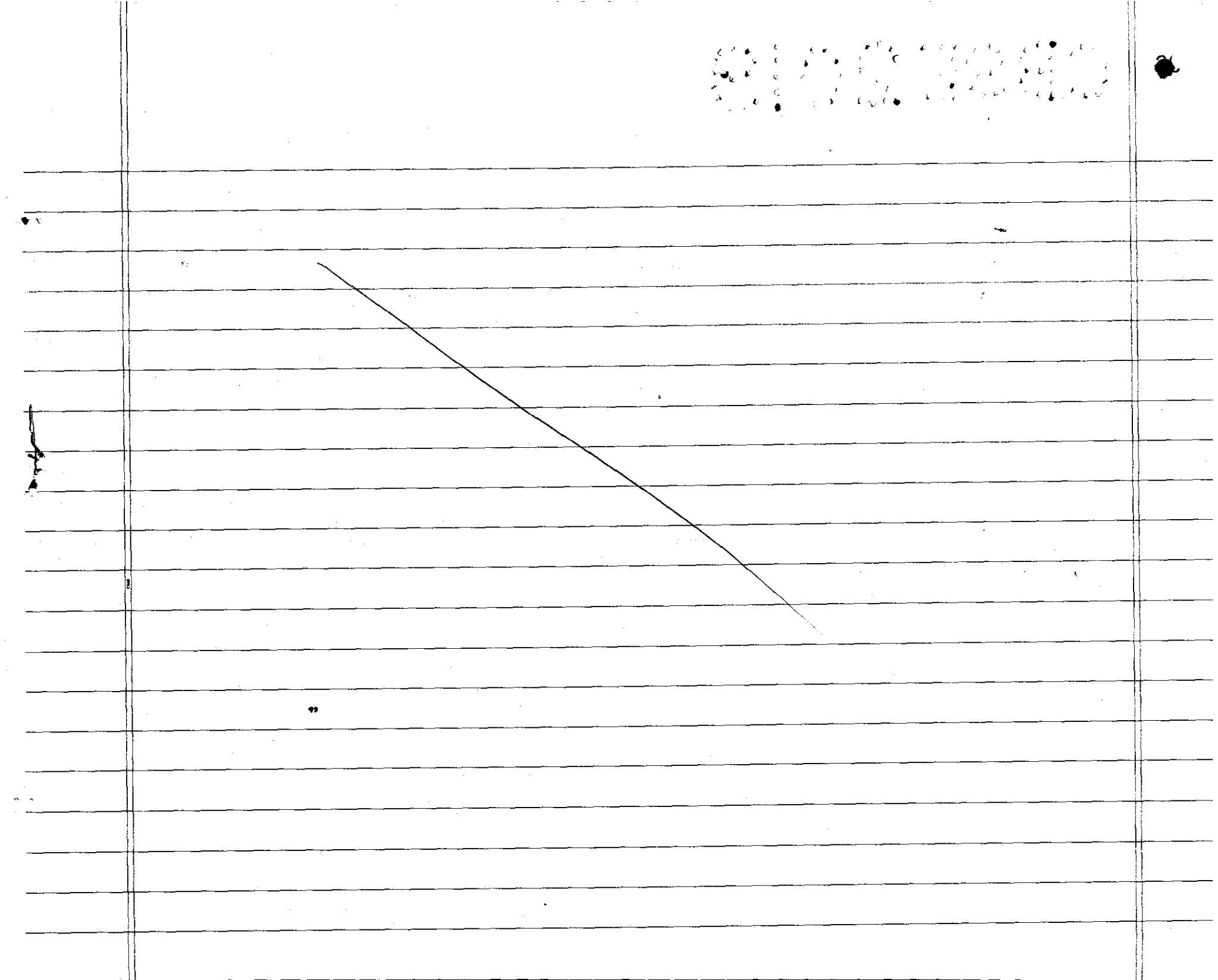
CNS 1072